एक वेगमय अतीत

एकार्ट से मेरी मुलाकात सिगमुन्डसहोफ मे हुई थी।वो मेरे ही फ्लोर पर रहता था।मै बर्लिन के टेक्निकल यूनिवर्सिटी मे बायोफिजिक्स और वो सामाजिक शिक्षा शास्त्र पढ रहा था।पढाई के खत्म होते ही हमे सिगमुन्डसहोफ छोड़ना पड़ा।मै शारलोटेनबुर्ग मे आ गया और वो क्रवाईत्सवेर्ग मे रहने लगा।हमारे बीच का सम्पर्क उतना सक्रिय तो न रहा. पर शुष्क भी नही हुआ।गाहे बगाहे हम एक दूसरे से टेलीफोन के जरिये सम्पर्क मे रहते थे।

मै उसी से मिलने क्रवाईत्सवेर्ग गया हुआ था।उसका मकान ब्रूसलरस्ट्रासे पर था।स्यूड स्टेर्न नाम के मेट्रो से मै बाहर निकल कर ब्रूसलरस्ट्रासे की ओर बढा।बर्लिन के इस उपेक्षित इलाके को छोटा इस्ताम्बूल भी कहा जाता है।तुर्कियों की यहॉ भरमार है।हर दूसरी दुकान इनकी है।या तो ये डोनर कबाब बेचते हैं या अपनी दुकान फूटपाथ तक बढा कर सब्जियॉ बेचते है।इनकी औरतें या लड़कियॉ अपने सर एक दुपट्टे से ढॅकी रहती है।इनके अधेड़ मर्द से उन्ड आ के आऊटडेटेड सूट बगैर टाईयों के पहने अपने हॉथों मे एक काले माले की मोतियॉ गिनते रहते हैं और कम उम्र के लड़के ढीले ढाले पतलूनो और कोटो मे जर्मन लड़कियों को घूरते रहते हैं।

जर्मनो को ये फूटी ऑखों नही सुहाते।विदेशी या परदेशी शब्द का जितना बुरा अर्थ जर्मन मे है उतना दुनिया के किसी दूसरी भाषा मे नही है।इसके लिए मै एक हद तक इन भाईयों का ही शुक्रगुजार हूॅ।

सेकेन्ड वर्ल्ड वार के बाद ये गेस्ट वर्कर की तरह जर्मनी मे आये और यहीं के होकर रह गये।तीन पीढियों से ये जर्मनी मे रह रहे हैं. पर इनका जर्मनो से कुछ खास लेना देना नही है।इनका अपना समाज है. इनकी अपनी दुनिया है।ये अपनी भाषा बोलते हैं अपने गीत गाते है।अपने त्योहार मनाते है और जर्मन मनोवृतियों का उपहास करते हैं।जर्मनों की इन्हे सिर्फ एक चीज भाती है और वो है इनकी करेन्सी।

जिस मकान मे एकार्ट रहता था. बड़ी जर्जर हालत मे था।होफ का भी बड़ा बुरा हाल था।जिधर देखो उधर ही मलवों का ढेर।सफाईयों से विदेशियों का कुछ खास सम्बन्ध नही होता है।बस अपना मकान साफ रहे. घर के बाहर कौन सी गंध पड़ी है. उनसे उनका कोई सरोकार नही होता है।

एकार्ट के सामने वाले मकान मे कोई एक सबीने नाम की सस्पेंडेट स्कूल टीचर रहती थी।बाकी मकानों मे तुर्की परिवार रहते थे।सड़क की तरफ इसी मकान के नीचले तल्ले मे एक अधेड़ तुर्क की डोनर कबाब की एक इम्बिस होती थी।ये इम्बिस लगभग खाली थी।सिर्फ कोने की मेज के पीछे एक औरत बैठी सिगरेंटें फूॅके जा रही थी।मै इस इम्बिस पर एक सरसरी निगाह डाल कर आगे बढ गया।

जब तब एकार्ट मुझे इसी सबीने की नाशलीला के बारे मे बताया करता था. पर उससे मिलने का ये मेरा पहला मौका था।तकरीबन छ बजे हम इस इम्बिस मे आये और जरा हट कर एक मेज लिये।झटपट इम्बिस का मालिक दौड़ा आया।वो एकार्ट को जानता था।एकार्ट उसे हाजी कहके बुलाता था।एकार्ट के कहने पर वो दो सूलथाईस बीयर की बोतलें बगैर ग्लासों के हमारी मेज पर रख गया।

रह रह कर मेरी नजर सबीने पर जा पड़ती थी।मेरी तरह एकार्ट का भी यही अंदाजा था कि सबीने की उम्र ज्यादे से ज्यादे सत्ताईस अट्ठाईस की रही होगी।कपड़े लत्ते से तो वो मुझे सभ्रान्त ही दिख रही थी।सफेद जीन्स. एक खुले गले की नीली ब्लाउज. गले मे एक पतली सोने की जंजीर. पीछे की तरफ किये बाल।बॉये पॉव मे एक चान्दी की पतली सी पायल. हाई हिल की चप्पलें ढंग की रिस्टवाच।वो अपने दाहिने पॉव को बॉये पॉव पर चढाये बैठी थी।उसके दाहिने वक्ष के ऊपर एक बड़ा सा तिल था और दाहिनी बॉह पर एक छोटे से सॅपोलिये का गोदना था।उसके पास लम्बा कद तो था ही. एक कसी देहयष्टि भी उसके पास थी।

हाजी उसके कौर्न का ग्लास खाली देख ही नही सकता था।झट से भर जाता था।उसकी मेज पर एक बीयर की भी बोतल थी।उसकी भी वो घूॅटें लगा लेती थी।उसके सामने पड़ा मेगा ऐसट्रे टोटे और राखों से भरा पड़ा था।उसके उॅगलियों मे फॅसी सिगरेट बूझने का नाम ही न ले रही थी।सुबह दस बजे से अब तक वो न जाने कौर्न की कितनी गिलासें पी चुकी थी और वो भी खाली पेट।मेरे लिये ये एक तरह की आत्महत्या थी।एक पढी लिखी लड़की को क्या उसका सस्पेंशन इस कदर तक तोड़ सकता है!ये मेरी समझ के बाहर का था।एक शून्य मे खोई ऑखें और उसका पथराया सा चेहरा. जिससे उसकी हॅसी और मुस्कान ने लगभग विदा ले लिया था।

मै एकार्ट की तरफ पलटा

ःइसके बारे मे तुम्हे और भी कुछ पता है!

ःनही।बड़ी दृढता से एकार्ट बोला।

ःइसकी कोई मदद नही की जा सकती!

ःकौन सी मदद!एक कसैली आवाज मे एकार्ट मुझे तरेरा।

ःइम्बिस खुली नही कि आ कर बैठ जाती है।उसने एक नौकरी ही तो खोया है।ऐसा कौन सा पहाड़ टूट पड़ा है।ऐसे लोगों की कोई मदद नही की जा सकती।तुम चुपचाप अपनी बीयर पीओ और उसे घूरना बन्द करो।

मैने बातचीत का विषय तो बदल दिया. पर मेरा मन सबीने के ही आसपास भटकता रहा।

तभी एकार्ट ने इशारे से सबीने के मेज के नीचे देखने को कहा।उसके मेज के नीचे उसके पेशाब की एक तलैया बनी हुई थी।हाजी की भी उस पर नजर पड़ चुकी थी।बिना कुछ कहे वो इम्बिस के पीछे वाले कमरे से एक पानी से भरी बाल्टी और एक झाड़ू उठा लाया और अपने फर्श की मोजायक साफ करने लगा।वो बेचारा भी क्या करता!अपनी आखिरी पुंजी लगा कर इधर उधर से उधार लेकर उसने ये इम्बिस खोली थी।किसी न किसी तरह उसे अपना और अपने परिवार का पेट पालना ही था।सबीने नही भी तो रोजाना इस इम्बिस मे तीस चालीस मार्क तो छोड़ ही जाती होगी।

मेरा कई बार जी चाहा उठ कर उसे जली कटी सुनाने का. पर मुझे ये भी पता था कि अगर वो कुछ बोलने की हालत मे भी होगी. तो क्या कहेगीःये मेरा जीवन है।मै जिस तरह से चाहॅूगी. उसे जीऊॅगी।अगर मेरा पीना तुम्हे अच्छा नही लगता. तो जाके किसी दूसरी इम्बिस मे बैठो।जब तक मेरे पास पैसे है और मै कोई तोड़ फोड़ नही करती. इस इम्बिस का मालिक भी मुझे पीने से नही रोक सकता।

शाम के नौ बजने को आए थे कि अचानक दो अरबी हाजी की इम्बिस मे आए और सबीने की मेज के सामने की कुर्सियों पर जा बैठे।एक के इशारे पर हाजी झटपट चिल्ड वोदके से तीन गिलासें भरा और दॉत चियारे इनकी मेज पर रख आया।

इन अरबों की टूटी फूटी जर्मन का बस एक ही भाग मेरे पल्ले पड़ाःस्नेल ट्रिन्केन. नाख हाऊसे ब्रिन्गेन।।
बड़ी कसैली आवाज मे एकार्ट भुनभुनायाःनाख हाऊसे ब्रिन्गेन!
ये दोनो अरबी सबीने को उठाये बाहर निकले।इनके बीच वो अपने पाँव मोड़े लगभग हवा मे झूल रही थी।
ये इम्बिस के बाहर निकले ही थे कि एकार्ट ने चिल्लाना शुरू कर दियाःनाख हाऊसे ब्रिन्गेन!दो इसे लेने आये हैं. दो सामने की नुक्कड़ पर खड़े होंगे और दस उसके दरवाजे पर।प्रमोद!इतनी गन्दी कौम मैने अपनी जिन्दगी मे नही देखी।
ःक्या करेंगे वो इस लाश के संग!
ःइसका सामूहिक बलात्कार करेंगे।तुम भी कभीं कभीं बेहद वाहियात सवाल करते हो।
ःइस लाश का सामूहिक बलात्कार!अब मुझसे हाजी की इम्बिस मे बैठा न गया।
एकार्ट से विदा लेकर मै मेट्रो स्टेशन की तरफ बढा।मुझे पूरे रास्ते एक इन्सान से गन्दा और विभत्स जानवर दूर दराज तक नज़र न आया।
एकार्ट के इस मकान मे मै कुल तीन बार गया।हर बार सबीने मुझे हाजी की इम्बिस मे मिली और पहली बार से मिलता जुलता दृश्य मुझे हर बार देखने को मिला।
कब होश मे आएगी ये लड़की!कब जगेगी ये अपनी नींद से!इस प्रश्न से अपने आप को बरी ही न कर पा रहा था।
फिर मेरे और एकार्ट के सम्पर्कों के बीच कुछ महीनो का एक छोटा सा अन्तराल आया।
सबीने की जब तब मुझे याद तो आती रहती थी. पर मेरा मन सदा कहता था कि जो मनमानी ये लड़की अपने आप और अपने शरीर से कर रही है. नतीजे के रूप मे एक अस्पताल या कब्रिस्तान उससे ज्यादे दूर नही है।
एक दिन एकार्ट का फोन आया।वो अपने ब्रूसलरस्ट्रासे का मकान छोड़ कर मेरिन्गडाम मे शिफ्ट होना चाह रहा था।वजह पूछने पर जो उसने बताया. वो मुझे अर्न्ततम तक कंपकंपा गयाः
अचानक सबीने ने हाजी की इम्बिस मे आना बन्द कर दिया।हाजी के अटकलबाजियों का तो जैसे अन्त ही न था।एकार्ट को भी वो कई दिनो से नही दिखी थी. पर उसके मकान मे अरबियों के आने जाने का ताँता न टूटा था।पता नही एकार्ट को किस बात का शक़ हुआ. उसने पुलिस को फोन कर दिया।आधे घन्टे के अन्दर उनका जत्था सबीने के मकान के दरवाजे पर आ जमा।वो कौल बेल दबा दबाके परेशान हो गए. दरवाजा वैसे ही का वैसे बन्द रहा।अब उन्हे अपने माऊजर्स के लॉक खोलने पड़ गए।एक पुलिसवाले का सधा सधाया बूट दरवाजे पर पड़ा।सारे पुलिसवाले सबीने के मकान के अन्दर थे।पुलिसवालों को वहाँ न सबीने मिली और न ही उसकी लाश।उसके मकान मे पाँच नंगे अरबी और दो रंडियाँ बरामद की गई और साथ मे एक बड़ी मात्रा मे हशीश भी।सबीने के ड्राईन्गरूम मे नही भी तो फर्श पर दसों तहियाये कम्बलों के बिस्तर लगे हुए थे।यहाँ वहाँ कन्डोमों के खाली पैकेट बिखरे पड़े थे।टवायलेट इस्तेमाल किये कन्डोमों से भरा पड़ा था।कीचन मे गन्दे बर्तनो का अम्बार गँजा पड़ा था।बाथरूम अनगिनत टूथब्रुशें. गन्दे तौलिये. सस्ते परफ्यूम की शीशियों से भरा पड़ा था।सबीने के मकान से एक ऐसी सड़ाँध बसी थी कि हर पुलिसवालों को अपनी नाक पर रूमाल रखना पड़ गया था।
ये अरबी मवाली सबीने को हर दिन सामूहिक भोगते ही थे. उसके मकान को भी अपने बाप का होटल बना रखे थे।
सबीने गेट्राऊडे अस्पताल मे पाई गई।पता नही! इस अस्पताल मे उसे क्यों भर्ती होना पड़ा था और वहाँ उसका कौन सा इलाज चल रहा था!
एक तरह से मेरे जीवन मे सबीने का अध्याय अपनी अन्तिम पृष्ठ पर था. पर मै जब कभीं किसी डिस्को पीपशो या पब्स मे जाता था. तब सबीने मे ही खो जाता थाःपता नही वो कहाँ है. कैसी है और क्या कर रही है!जीवित है या फिर किसी कब्र मे दफन है!
सबीने से पहले मै इस तरह की कई लड़कियों से मिल चुका था।इनमे से दो को तो मै व्यक्तिगत भी जानता था।इनकी मुझे याद आई नही कि सबीने की याद आ के उससे जुड़ जाती थी।इन दोनो को उनकी सशक्त माँओं ने सम्हाल लिया।पता नही. सबीने के पास उसका कोई सगा भी था या नही!
अपनी अस्मिता और उसकी सीमा एक औरत के हाँथ मे होती है।ये दो शब्द उसकी आँखों से ओझल हुए नही कि बस उसके ईर्दगिर्द दरिन्दे भेंड़िये ही भेंड़िये।मै ये पूरे विश्वास के साथ कह सकता हूँ कि इस विश्व मे जब तक हम मर्दो को नारियों का स्पष्ट संकेत नही मिलता. हम उन्हे छू तक नही सकते. उन्हे छेड़ने की बात तो दूर की रही।
मै कई दफे गेट्राऊडे अस्पताल जाकर सबीने से मिलना चाहा. पर मै नही गया।कोरी सहानुभूतियों का जर्मनी मे क्या काम!इनसे उसे मै कौन सा संबल देता!हर मदद का एक आकार और रूप होता है और वो हमसे अपने आकार और रूप के अनुसार ही फरियाद करता है।
एक छोटा सा ही अरसा गुजरा थाः
मै अपने एक कलिग के साथ बेर्गस्ट्रासे के एक आयरिश पब मे बैठा बीयर पी रहा था।वहाँ दो कमरे थे।इन्ट्रेन्स के बाद वाला कमरा तो बिल्कुल भरा पड़ा था. पर इससे लगा कमरा बिल्कुल खाली था।पहले वाले कमरे मे किसी एक फर्म की पार्टी चल रही थी।दूसरा कमरा भी इसी फर्म ने रिजर्व करवा रखा था।पहले वाले कमरे मे इस फर्म मे काम करने वालों के अलावे ज्यादे से ज्यादे दस या बारह बाहर के मेहमान रहे होंगे।इनके बीच गन्दे से गन्दे मजाक़ सुने और सुनाये जा रहे थे।शराब और बीयर पानी की तरह पी जा रही थी।ये तीस पैंतीस तो रहे ही होंगे।आयरिश पब की मालकिन ने इनकी सेवा मे तीन जवान वैटेंस लगा रखी थी।उन्हे भी ये खोदने खादने से बाज न आते थे।कई तो उन्हे अपनी गोद मे भी बिठा लेते थे।
हमे जो वैटेंस अटैन्ड कर रही थी. वो आयरलैंड की थी।उसका नाम ऐरन था।उसी ने मुझे बताया कि ये पार्टी इस फर्म के बॉस की विदाई की पार्टी है।उसने इशारे से इस फर्म के बॉस से भी मेरा परिचय करवाया।उसकी उम्र यही कोई सत्तावन अट्ठावन की रही होगी।सर पर एक बाल तक न थे।उसकी निकली तोंद की नाभी से उसके टाई का तिकोना छोर जब तब खेलने लगता था।वो हँसता भी था. अपने पूरे शरीर से और खासकर के अपनी तोंद से।मुझे वो शक्ल सूरत से ही काईंयाँ दिख रहा था।
इस फर्म मे ज्यादेतर औरते हीं काम करती थीं।इन पर भी मैने एक सरसरी नजर डाली।इनकी उम्र बीस बाईस से शुरू होकर चालीस पैंतालीस पर खत्म होती थी।इनका बॉस जिस पर भी नज़र डालता था. उसे मुस्कराने का उपक्रम करना पड़ जाता था।उसके बकवासों पर भी औरतें खिलखिलाने लग पड़ती थीं या फिर पुरग़ौर हो जाती थीं।सत्ते का बोलवाला चल रहा था।
हमारी दूसरी बीयर खत्म होने को आई थी।अब मै यहाँ लम्बा बैठना भी नही चाहता था. पर मेरा कलिग तीसरे बीयर की जिद़ पकड़े बैठा

था।साढे सात बजने को आये थे।इस फर्म की दो लड़कियॉ दूसरे कमरे मे जाकर अपने विडियो कैमरे की तारें वारें ठीक करने लगी।पब की वैटें सें भी इस कमरे की साज सज्जा मे लगी हुई थीं।वहॉ की सारी मेजें हटा दी गईं थीं।वहॉ की सारी कुर्सियॉ अर्द्धगोलाकार लगाई जा रहीं थी।इन कुर्सियों के सामने एक चमड़े का बड़ा सा सोफा लगा दिया गया था।म्यूजिक सिस्टम मे बार बार सिर्फ एक गाने को चेक किया जा रहा थाःआईफ द टाईगर।जितना नफरत मै इस गाने से करता था.उससे कहीं दस गुना ज्यादे सिल्वेस्टर स्टालोन से।
ऐरन तीसरी बीयर हमारे टेबल पर रख गई थी।आठ बजने को आये थे।दस मिनट पहले ही ये पूरा फर्म दूसरे कमरे मे जा चुका था।हमारे अलावे पहले वाले कमरे मे बस छह दूसरे लोग बचे थे।
इनका बॉस अपने सिंहासन पर विराजमान था और उसके पीछे उसके पिट्ठुओं ने भी अपनी अपनी यथोचित कुर्सियॉ सम्हाल ली थीं।
ठीक आठ बजे पसीने से लथपथ यूनाईटेड पार्सल सर्विस का एक ड्राइवर अपनी ट्राली पर लकड़ी का एक बड़ा सा सन्दूक लिए एक तीर की रफ्तार से पब मे घूसा।पहले तो मै सोचा कि शायद कोई डिलिवरी वगैरह होगी।उस पर उतना ध्यान भी मैने न दिया।अभीं वो ये सन्दूक साहव के सामने रखा ही था कि पहले वाले कमरे के दूसरे मेहमान हड़वड़ाकर दरवाजे पर जा खड़े हुए।अपने कलिग के कहने पर मुझे भी उठ कर दरवाजे तक जाना पड़ा।
सन्दूक पर एक ताला लगा हुआ था।साहव के पास उसकी चावी थी।साहव ने ज्योंही ताले को खोला.सन्दूक की सारी दीवारें भरभरा कर फर्श पर जा गिरीं।सन्दूक मे उॅकड़ू एक लड़की बैठी थी।अंगड़ाई लेकर वो उठी ही थी कि पूरे वाल्यूम पर आईफ द टाईगर का गाना बजने लगा और वो लड़की लहरा लहरा कर नाचने लगी।उसने एक हरे चमड़े का तंग सा सूट पहन रखा था और गले मे हरे सिल्क का दुपट्टा बॉध रखा था।उसके पास गर्दन तक लहराते बाल थे.जो जब तब उसके चेहरे पर आ गिरते थे।धीरे धीरे उसके कपड़े उतरने लगे.अब वो बस एक काली स्लिप मे अपना एक पैर साहब की जांघ पर रखे एक नागिन की तरह थिरक रही थी।अव वो साहव को ललचा ललचा कर अपनी स्लिप भी धीरे धीरे नीचे सरकाये जा रही थी।इस काम मे साहव भी उसकी मदद किये जा रहे थे।जव वो अपनी स्लिप उतार कर दर्शको के बीच फेंकी.तव किस्मत से वो एक अधेड़ के हॅाथ लगी।इस लड़की को साहब ने अपनी गोद मे खींच लिया और वो अधेड़ अपनी पाई स्लिप को एक गुलाव के फूल की तरह सूॅघे जा रहा था।साहब को आज की शाम हर वात की छूट थी।उस मेमने को अपनी गोद मे दवाये वो कमीना अपनी कम से कम वाणप्रस्थ अवस्था मे हर चीज का आनन्द लिये जा रहा था।उसके धर पकड़ की वकायदा विडियो फिल्म भी बन रही थी।
अचानक मेरी नजर उस लड़की के दाहिने बॉह पर पड़ी.जहॉ एक सॅपोलिये का गोदना था।
न चाहते हुए भी मुझे चिल्ला कर कहना पड़ गयाःसबीने!कब जगोगी तुम अपनी नींद से!तुम्हे इससे अच्छा काम जर्मनी मे कोई दूसरा न मिला!तुम कब तक अपने आप को हम दरिन्दों से नुचवाती रहोगी!सम्हालो अपने आप को।
एक पल के लिए पब में सन्नाटा सा छा गया।अपने कलिग की बॉह परे करके मै इस पब से वाहर निकल आया।गुस्से से मेरा मन और तन दोनो ही जल रहा था।
इस शाम के वाद न मैने इस पब को अल्विदा कहा.वल्कि अपने कलिग से भी एक दूरी रख ली।
क्या हो गया है इस समाज को!जानवरों की तरह ये वेशर्म और वहशी हो चले हैं।मै किस देश मे रह रहा हूॅ!जर्मन मार्क के अलावे क्या इनके पास सिर्फ हमे दिखाने को वेशर्मियॉ ही शेष वची हैं!
हर दिशा के अनगिनत कोणों से अनगिनत सवाल पागल वादलों की तरह उमड़ घुमड़ कर मेरे समीप आते थे।मै अक्सर अपने आप से पूछता था कि आखिर मेरे लिए अपने जीवन मे क्या जरूरी थाःभौतिक उपलब्धियॉ!चारित्रिक उत्कर्ष!एक वॅधा वॅधाया परिवार और इससे गूॅथी जिम्मेवारियॉ! पलायनवाद! यर्थाथ!या फिर क्या!क्या ढूॅढ रहा हूॅ मै इस देश मे!
शायद ही ऐसी कोई शाम रही होगी कि मै विना अपनी मेज पर मुक्के वरसाये अपने विस्तर पर गया होऊॅ।
एक और चीज.जो मुझे वेहद परेशान किये हुई थी.वो ये थीःविना कुछ गॅवाये मै सवका उद्धार चाहता था।अगर तुम्हे अपना कुछ गॅवाना ही नही है.तव क्यों तुम उद्धार जैसे वजनी शब्दों से उलझते हो!
मैने सवीने को उसके भाग्य के भरोसे सौंप दियाः
इस वार वर्लिन को यहॉ की ठन्ढ ने मई के मध्य मे मुक्त किया।होफ मे कई छोटे वच्चे जो अपनी मॉ के गोद से उतरने का नाम तक न लेते थे दौड़ते और लुढकते नज़र आते थे।जो सपोर्टिंग व्हिल्स के वावजूद अपनी सायकलें न सम्हाल पाते थे.वही अब दो पहियों पर अपनी सायकल हिनहिनाते दिखते थे।आन्जेलिका.तमारा.जेनी.कैन्डी तो अपनी तेरहवीं वर्ष मे ही ठीकठाक विकसित दिखती थीं।
पिछली ठंढ मे कई परिवारों का विघटन हो गया था.कई नए परिवार होफ को घेरे मकानों मे आ चुके थे।कईयों ने अपना मकान वदल लिया था।शर्म और हया की वजह से जर्मनी मे ठंढ के दिनो मे ही इस तरह के ड्रामे हुआ करते हैं।विघटित परिवार अपने विघटन का निर्णय न जाने कव का ले चुका होता है फिर भी वो पड़ोसियों की वजह से ठंढ और अन्धेरे का इन्तजार करता रहता है।
सितम्वर और मार्च के वीच इन सात महीनों के दरम्यान मेरे इर्द गिर्द के परिवेश मे काफी परिवर्त्तन आ चुका था.पर एक परिवर्त्तन पर मुझे कुछ ज्यादे ही चौंकना पड़ा था।डेटलेफ के साथ अव मुझे रोजाना नई नई लड़कियॉ न दिखती थी।वो कई दिनो से मुझे एक ही लड़की के साथ दिख रहा था।
डेटलेफ से मेरा कोई खास परिचय नही था।मै जो कुछ उसके वारे मे जानता था.अपने ही एक पड़ोसी के जरिये जानता था।
डेटलेफ की उम्र वावन की हो चली थी और वो जर्मन पोस्ट मे गजटेड ऑफिसर था।मेरी वालकोनी के ठीक सामने उसका चार कमरों का मकान निचली मंजिल पर था।उसने शादी नही की थी.पर उसे लड़कियों की कोई कमी नही थी।काम के वाद वो अकेला घर नही आता था।कोई न कोई उसके संग होता ही था।इनमे से किसी की उम्र मुझे पच्चीस के ऊपर की नही लगती थी।
वर्लिन मे अगर पैसा हो.एक काव्रिओ और एक वेल फर्निश्ड मकान हो.तो लड़कियों की यहॉ वाकई मे कोई कमी आज भी नही है।
पूर्वी और पश्चिमी जर्मनी के वीच की दीवार गिरने के वाद सोवियत सत्ता हिली.पूर्वी यूरोप आजाद हुआ.फिर तो वर्लिन मे लड़कियों की ऐसी वाढ आई जिसे आज तक नही रोका जा सका है।यहॉ के वार.चकले और डिस्को रूस.पोलेन्ड.चेखियन.हन्ग्री.रूमानिया इत्यादि देशों से आई लड़कियों से खचाखच भर गए।इनके पहले वर्लिन मे थाईलैंड और वियेतनाम की लड़कियों की वाढ आ चुकी थी।यहॉ के लोकल अख़वारों का तो ये हाल है कि इनमे समाचार कम वस इन लड़कियों के ही इश्तेहार खुल्लम खुल्ला छपते हैं।यहॉ के डाऊन टाऊन कू डाम के पवों का ये हाल

है कि अगर वहॉ दस मर्द बैठे हैं तो उन पर दो सौ लड़कियॉ मक्खियों की तरह भिनभिनाती दिखती है।
जर्मनी मे शादी ब्याह करके जिम्मेवारियों मे कोई फॅसना ही नही चाहता है।इसकी एक दूसरी वजह भी है।जर्मनी का कानून भी कुछ इस तरह का है कि यहॉ शादी करना एक तरह से अपनी मौत को बुलाने जैसा है।एक बार पत्नी बिदकी नही कि वो अपने पति से भीख मॅगवाई नही।तलाकसुदा पत्नियों की यहॉ चॉदी ही चॉदी है।सारी मार पुरूषों को ही सहनी पड़ती है।
संवेदनशीलता और चरित्र का जो उपहास जर्मनी या यूरोप के दूसरे देशों मे हो रहा है.वो मै पिछले अट्ठारह वर्षो से देख रहा हूॅ और एक हद तक झेल भी रहा हूॅ।कभीं कभीं मेरा मन कहता है कि इनका पतन दिन व दिन अवश्यम्भावी होता जा रहा है।
डेटलेफ ही नही.एक तरह से यहॉ की एक आम राय हो चली है कि पत्नियों से कहीं बेहद सस्ती और सुरक्षित तो रंडियॉ होती हैं।न कोई नाज.न कोई नखरा।न किसी तरह की जिम्मेवारी और कोई सिरदर्द।एक तय कीमत और मनोवांछित सेवायें।आज इसका संग तो कल उसका।जीवन भर रोजाना एक ही तरह की सूप भला कौन खाना चाहता है!
अचानक डेटलेफ मे आए परिवर्त्तन पर मै चकित था।
उसके मकान के सामने थोड़ी सी घिरी जमीन थी.जहॉ एक बड़ा सा छाता तन चुका था।छाते के नीचे दो आरामकुर्सियॉ लग चुकी थी।उसके अपने काम से वापस आने का समय पॉच बजे का होता था।उसकी नई प्रेमिका कॉफी और तरह तरह की पेस्ट्रियॉ एक मेज पर सजाये उसका इन्तजार करती रहती थी।इनके शाम का खाना भी इस छाते के नीचे ही होता था।
वीकएन्ड मे ये सज धज के एक दूसरे का हॉथ थामे घूमने जाते थे।
डेटलेफ की प्रेमिका कद मे उससे थोड़ी लम्बी थी।इनकी उम्र मे नही भी तो पन्द्रह सतरह वर्षो का अन्तर तो रहा ही होगा।
एक बार होफ मे इनसे मेरी आमने सामने मुलाक़ात हुई।डेटलेफ से हॉथ मिला कर उसकी प्रेमिका को हलो कह के मै आगे बढने ही वाला था कि उसने अपनी प्रेमिका का परिचय अपनी होने वाली पत्नी के रूप मे दिया।औपचारिकतावश मुझे पूछना ही पड़ाःकब शादी करने का विचार है!
ःएप्लाई तो हमने कर दिया है।देखो कब डेट मिलता है!
ःये तो बड़ी ख़ुशी की बात है।मेरी ओर से तुम दोनो को बधाई।
इस मुलाकात के बाद डेटलेफ के प्रति मेरा रूख थोड़ा नम्र जरूर हो गया।कम से कम रूक कर मै उसका और उसके प्रेमिका का हाल चाल अवश्य ही पूछ लेता था।उससे ऐसे भी शुरू के ही दिनो से मेरा तुम का रिश्ता था.लिहाजा उसकी होने वाली पत्नी सबीने को मै तुम से ही बुलाने लगा।
गर्मी के दिनो मे मुझे बालकोनी मे देखते ही डेटलेफ एक तंग शौर्टस पहने पास आ धमकता थाःनीचे आओ.एक बीयर साथ पीते है।
कोई न कोई बहाना बना कर मै उसे टाल देता था।सबीने के बदन पर भी बस जरूरत भर के ही कपड़े होते थे.पर वो अपना पूरा बदन एक बड़े से तौलिये से ढॅके तोपे रहती थी।
जब मैने सबीने को पहली बार देखा तो न जाने क्यों मुझे ऐसा लगा जैसे मै उससे इसके पहले कहीं मिल चुका हूॅ।घर वापस आते ही मैने अपनी यादों के घोड़े हर दिशा मे दौड़ाए.पर निष्फल।कई दिनो तक मै हर भूले बिसरे चेहरों मे उलझा रहा.बर्लिन का एक एक कोना छानता रहा फिर ये सोच कर कि शायद उसकी किसी से साम्यता होगी.इस प्रयास को मैने लगभग बन्द कर दिया।लगभग...
वर्षो से मै इस समाज मे रह रहा था.पर यहॉ की बेशर्मियॉ मेरे लिए बेमानी नही थी।ये मुझे सिर्फ चौंकाती ही न थी.बल्कि ठीकठाक व्यस्त भी रखती थीं।यहॉ असमान्य कहने को रह ही क्या गया था!सब कुछ ही समान्य था।
न जाने क्यों रह रह कर मुझे ब्रूशलरस्ट्रासे की सस्पेंडेड टीचर और आयरिश पब की स्ट्रीपटिज डान्सर की याद आती थी।उसका नाम भी सबीने ही था।उससे मै आखिरी बार छ वर्ष पहले आयरिश पब मे मिला था।मै उसे वहॉ भी न पहचाना होता.अगर मै उसकी बॉह पर गूदे सॅपोलिये को न देखा होता।इस स्ट्रीपटीज डान्सर और सस्पेन्डेड सबीने के बीच महज डेढ वर्ष का अन्तराल रहा था।
इस सबीने की उम्र अनुमानतः आज के दिनो मे चौंतीस पैंतीस होनी चाहिये थी.पर डेटलेफ की सबीने मुझे इतनी उम्र की न लगती थी।
हर सुबह काम पर जाते समय अनायास मेरी नजर डेटलेफ के रसोई की खिड़की की ओर उठ जाती थी।उसके पर्दे हटे होते थे।सबीने अपने सारे बाल पीछे की तरफ समेटे पता नही किन कामों मे लगी होती थी।जब तब उसकी नजर मेरी तरफ भी उठ जाती थी।वो मुस्करा कर अपने हॉथ लहरा देती थी।जब मै शाम को वापस घर आता था.तो वो अपने मकान के सामने अपने लगाये दो चार फूल के पौधों की सेवा मे लगी होती थी।नमस्ते कहने पर पलट कर नमस्ते कहके मेरा हाल चाल पूछने लग पड़ती थी।
होफ मे लगने वाली औरतों की पंचायतों मे सबीने को कोई दिलचस्पी नही थी।नमस्ते बंदगी उसकी सबसे थी.पर उसका उठना बैठना अकेले ही होता था।
उसे डेटलेफ से एक झब्बरदार कुत्ता भी मिल चुका था।वो भी उसे ठीक ठाक व्यस्त रखा था।
मेरे और डेटलेफ के बीच का सम्बन्ध नमस्ते बंदगी तक ही सीमित था।ये ठीक है कि उसके कहने पर मै आप से तुम पर आ गया था.पर इस सम्बन्ध को मै इससे ज्यादे बढाना भी नही चाहता था।पिछले दो महीनों से मै देख रहा था कि वो मेरी दोस्ती के लिए लालायित है।जब भी मिलता था.न जाने कहॉ कहॉ की बातें सुनाने लग पड़ता था।बड़ी मुश्किल से मुझे उससे छुटकारा मिल पाता था।
एक शाम अचानक मेरी कौल बेल घहराई।मै यही सोच कर उठा कि शायद कोई मेरे लेटर बाक्स मे इश्तेहार डालने आया होगा।घंटी दवा कर मै वापस ड्राईगरूम मे आ गया।फिर मुझे सीढियों पर किसी के चढने की आहटें मिली।जब दुबारा मेरे दरवाजे की घंटी बजी.तब मै चकराया।की होल से बाहर झॉका.तो देखा दरवाजे पर डेटलेफ खड़ा है।मेरी विस्मयता की कोई सीमा न थी।
दरवाजा खोल कर मै उसे ड्राईन्गरूम मे ले आया और उसे सादर बैठने को कहा
ःकुछ पीने के लिए ले आऊॅ!
ःक्या है तुम्हारे पास!
ःसब कुछ।
ःबीयर भी!
ःहॉ।

ःतुम भी साथ मे पीओगे न!
ःहॉ क्यों नही!
दो वीयर लेकर मै ड्राईगरूम मे आया।एक खोल कर डेटलेफ को पकड़ाया और दूसरी खोलते समय उससे पूछाःमेरी याद कैसे आई!
ःतुम बैठो तो सही पहले चियर्स करते हैं।
उससे चियर्स करके मै उसके सामने के सोफे पर जा बैठा।
एक सरसरी निगाह वो मेरे ड्राईन्गरूम की दीवारों पर लगे तसवीरों पर डालके अपना मौन तोड़ाःतुम्हारे पास एक काम से आया था!
ःफिर कहते क्यों नही हो!
ःआने वाले शुक्रवार को हम और सबीने शादी करने जा रहे है।तुम सबीने के बेस्टमैन बन सकते हो!
मै अवाक रह गया।मेरी समझ मे नही आया कि इन्हे मै ढंग से जानता तक न था और सबीने को तो बिल्कुल ही नही फिर ये मुझे बेस्टमैन क्यों बनाना चाहते हैं!फिर भी मै डेटलेफ को निराश नही करना चाहता था।उससे पूछा
ःकिस स्टान्डेसआम्ट मे शादी कर रहे हो!
ःलिख्टरफेल्डे वेस्ट मे यार!
ःकितने बजे!
ःनौ वजे
ःठीक है।मै सीधे काम से वहॉ समय पर पहुॅच जाऊॅगा.फिर मुझे काम पर लौट जाना होगा।
ःऐसा न करो भाई।इस गरीव के लिए तुम एक दिन की छुट्टी नही ले सकते!
ःपरन्तु छुट्टी की क्या जरूरत है!
ःअरे भाई!शादी के बाद आराम से घर पर बैठ कर सबीने के हॉथों की बनी पेस्ट्रियॉ खायेंगे।तीन बजे इटालिया नूओवा चलेंगे।वहॉ मैने छ मेजें रिजर्व करवा रखी है।दबाके दारू पियेंगे।
ःतुम्हारा बेस्टमैन कौन है!
ःबचपन का एक दोस्त है।
ःबर्लिन मे ही रहता है!
ःहॉ।
ःतुमसे मिलता रहता है!
ःमिलता रहता था.पर जब मुझे ये पता चला कि वो एक मर्द के साथ रह रहा है.मैने उससे मिलना जुलना बन्द कर दिया।
अब मै उससे क्या कहता!चुप ही रहा।
वो मेरे हॉ या ना का बड़ी अधीरता से इन्तजार कर रहा था।रह रह कर उसके ऑखों मे आई दयनीयता गाढी हो जाती थी।चाहते हुए भी मै उसे ना कहने की स्थिति मे न था।एक बात भी मुझे मथे जा रही थीःइस गजटेड ऑफिसर को ढंग के बेस्टमैन क्यों नही मिल रहे हैं!
ःठीक है डेटलेफ!मै कल ही शुक्रवार की छुट्टी के लिए एप्लाई कर देता हूॅ.पर तुमसे एक बात पूछना चाहता थाःतुम्हे मेरा ख्याल कैसे आया!
ःदरअसल तुम्हारा नाम सबीने ने प्रपोज किया है।
मुझे चौंकना पड़ा।
इस शाम मुझे डेटलेफ और सबीने के बारे मे ये भी पता चलाःडेटलेफ के पास सगे के नाम पर उसकी एक तलाकसुदा पत्नी और इस पत्नी से एक बेटा और बेटी के अलावे और कोई नही है।वर्षो से उसका इनसे भी कोई सम्बन्ध नही है।उसे तो ये भी पता नही था कि वो जर्मनी के किस हिंस्से मे रह रहे है और क्या कर रहे हैं।सगे के नाम पर सबीने के पास एक विधवा मॉ थी.जो कहीं बोखूम मे रहती थी।इनका भी एक दूसरे से कोई सम्बन्ध न था।
ब्रुशलरस्ट्रासे की सस्पेंडेड टीचर और तदनन्तर आयरिश पब की सबीने का चेहरा मेरे सामने लगभग धूॅधला हो चला था।पॉच दिनों के बाद डेटलेफ और सबीने का विवाह होने वाला था जिसमे मुझे सबीने का बेस्टमैन बनना था।उसे इस बात की बेहद खुशी थी कि मैने डेटलेफ को इस बात के लिए हॉ कह दिया था।
सोमवार को सबीने मुझे गेरानियनस्ट्रासे पर मिली।चहकती मेरे पास आई और कहने लगीःतुम्हे पता नही कि मै इस बात पर कितनी खुश हूॅ कि तुम मेरे बेस्टमैन हो।तुम्हे ये भी पता न होगा कि मै तुम्हारी कितनी आभारी हूॅ!
ःइसमे आभार की कौन सी बात है।मेरे लिए तो ये वाकई गौरव की बात है।
उसके हॉथ का थैला मैने अपने हॉथ मे ले लिया।धीरे धीरे हम अपने घर की तरफ बढे जा रहे थे।वो मुझसे नही भी तो तीन चार सेंटीमीटर लम्बी थी।डेटलेफ तो उसके सामने बौना ही लगता था।
मै पहली बार सबीने के कहने पर उसके छोटे से बगान मे एक बड़े छतरी के नीचे बैठा उसके संग चाय पी रहा था और अपने बारे मे बताये जा रहा था।जब डेटलेफ काम से वापस आया और मुझे सबीने के संग बैठा देखा तो खुशी से नाचने ही लग पड़ा।दसों बार मुझे उठ कर उससे गले मिलना पड़ा।अब मुझे न तो डेटलेफ की आवारगी मे कोई रूचि थी और न ही उसके वेगमय अतीत मे।मन से मै उसको अपने दोस्त के रूप मे स्वीकार कर चुका था।खुशी से रह रह कर न सिर्फ उसकी ऑखें.बल्कि सबीने की ऑखें भी नम हो जाती थीं।
चलने से पहले मै डेटलेफ से गले मिला और सबीने को भी अपने गले से लगाया।मेरे लिए ये शाम एक बेहद मधुर शाम थी।
शुक्रवार की सुबह नहा धोकर मैने एक नीली पैंट.सफेद बुशर्ट पहनी और एक लाल रंग की टाई बॉधने अपने बालकोनी मे गया।डेटलेफ के मकान के सामने उसकी धुली धुलाई बे एम वे काब्रिओ खड़ी थी.जिसे दो फ्लोरिस्ट तरह तरह के फूलों से सजाये जा रहे थे।मुझे ऐसा लग रहा था जैसे ये काब्रिओ ही व्याहने जा रही हो।
सवा आठ बजे मै नीचे उतरा।डेटलेफ और सबीने भी तैयार बैठे थे।अपने लाल कोट और लाल टाई मे डेटलेफ मुझे कहीं से बावन साल का न दिख रहा था।सबीने ने एक सफेद सिल्क का लम्बा सा फ्राक पहन रखा था।गले मे उसने एक सफेद रंग का ही दुपट्टा लपेट रखा था।पीछे किया

जूड़ा और सर पर सफेद मोतियों का ताज उस पर इतना फव रहा था कि मै बता नही सकता।ऊँचे एड़ियों के सफेद सैन्डल मे वो कुछ और ही लम्बी दिख रही थी।उसके चेहरे पर दिव्यता,स्निग्धता का एक ऐसा मिश्रण आ पूता था,जिसे मै शब्दों मे नही बॉध सकता।डेटलेफ का बेस्टमैन भी आ चुका था।वो पता नही किस परफ्यूम मे नहा कर आया था!डेटलेफ के ड्राईन्गरूम मे सिर्फ उसके परफ्यूम की खूशवू व्याप्त थी।
डेटलेफ अपनी ड्राइविंग सीट पर बैठ चुका था।उसके बगल मे उसका बेस्टमैन भी बैठ चुका था।काब्रिओ के पिछले दोनो दरवाजे खुले थे।सबीने अपने दोनो हॉथो से मेरा दाहिना हॉथ थामे हुई थी।सम्हाल कर मैने उसे गाड़ी की पिछली सीट पर बिठाया उसके सेफ्टी बेल्ट को लॉक किया फिर उसका दरवाजा बन्द किया।दूसरी तरफ जाकर मै अपनी सीट पर बैठा।जब मै अपनी सेफ्टीवेल्ट लॉक कर रहा था,तब एक नजर मैने होफ पर भी डाली।शायद ही इसको घेरे ऐसा कोई मकान रहा होगा,जिसकी होफ की तरफ खुलने वाली खिड़कियॉ न खुली हों।
हमारी गाड़ी मद्धम गति से गेरानियनस्ट्रासे की तरफ बढी।कुछ खिड़कियों से आलेस गुटे की आवाजें आ रही थी तो कुछ से आर्शलोख की।सबीने अपनी दोनों काने पहले से ही अपने हॉथों से ढ़ँक रखी थी।इस होफ से घिरे मकानो मे डेटलेफ को जहॉ भी जो कुछ पाना था,वो पा चुका था।जिन्हे वो पा चुका था,उनसे वो आर्शलोख सुन रहा था,जिन्हे वो एप्रोच नही किया था,उनसे वो आलेस गुटे सुन रहा था।
एक अजीब सी बात ये है कि इस होफ को घेरे पचासों मकानो मे तकरीवन सत्तर प्रतिशत विन व्याहे एक या दो बच्चों की मॉएँ रहती थीं।इनके पास कोई काम भी न था।सरकारी पैसे इन्हे मिल जाते थे।इनके पास सिर्फ दो व्यस्ततायें थीं:होफ मे लगे बैंचो पर बैठ कर पंचायत करना या फिर एक उकाब की तरह विवाहित या अविवाहित मर्दो पर नज़र रखना।इनमे से कईयों से मेरी भी नमस्ते बंदगी थी।स्टेफानी,सूशाने,बिरगिट,बेटीना,आडा,कैस्ट्रिन,क्रिस्टिन,कैथरीना आदि इन मॉओं के नाम थे,जिन्हे असमय एक दो बच्चे के मॉ बनने के बाद विवाह करने की अनिवार्यता खल रही थी।ये अपनी गलतियों से इतना भी नही सीख पाई थीं कि किसी का मन जीतने के लिए उन्हे अपने मन को सक्रिय करना चाहिये,अपने तन को नही।
जब मै स्टान्डेसआम्ट मे डेटलेफ और सबीने के व्याह की कागजों पर हस्ताक्षर करने झुका तो अचानक सबीने अपनी दाहिनी हॅथेली मेरे कन्धे पर रख दी।जब वो मुझसे गले मिली,तब एक तरह से उसने मुझे भींच ही लिया:ईश्वर तुम्हे एक लम्बी उम्र दें।हम सभी को तुम्हारी जरूरत है।ऑसू का एक एक मोटा सा बूँद न जाने मेरे किस ऑख से बाहर निकला और जाकर सबीने के किस कन्धे पर तिरोहित हो गया।
इटालियन नूओवा मे आये डेटलेफ के सारे मेहमान उसके कलिग्स ही थे।सबकी सब औरतें ही थी।डेटलेफ के वेस्ट मैन राईनर का दोस्त पेटर भी आमंत्रित था।ये दीन दुनिया भूलाये एक दूसरे की ऑखों मे खोये हुए थे।डेटलेफ भी एक दूरी रखते हुए अपनी कलिग्स मे खोया हुआ था।हल्के फूल्के नशे मे हम सभी आ चुके थे।इस शाम मुझसे एक गलती हो गई थी।मै सबीने को अपने सबीने की कहानी आद्योपान्त सुनाये चला जा रहा था:मै आज तक सबीने से वरी न हो पाया हूँ।अक्सर मुझे उसकी यादें घेरने लगती है।जब मै उससे आयरिश पब मे मिला,तब मै इस बात से बेहद खुश हुआ कि चलो कम से कम अब उसका शरीर उसकी गिरफ्त मे तो है।दुख मुझे सिर्फ एक बात का हुआ कि एक मागिस्टर की हुई लड़की अपने पूरे होशोहवास मे कुछ पैसों के लिए किसी एक गैर के गोद मे बैठी अपना बदन नुचवा रही है।पैसे कमाने के दूसरे जरिये क्या जर्मनी मे नही रह गये हैं!
:तुमने उसे दुबारा कैसे पहचाना!बड़ी पथराई आवाज मे सबीने मुझसे पूछी
:उसके गले के तिल और उसके बॉह पर गूदे सॅपोलिये के जरिये।मुझसे इस पब मे न रह गया,सबीने को बुरा भला कहके मै इस पब से बाहर निकल आया।मै इस पब मे आज तक दुबारा न गया और मै वहॉ दुबारा कभी न जाऊँगा।
बारह बजे रात तक हम इस रेस्त्रॉ मे बैठे रहे।मेहमानों से विदा लेने के बाद सबीने ने ही रेस्त्रॉ का बिल चुकाया।डेटलेफ नशे मे बिल्कुल ही धुत्त हो चला था।किस्मत से ये रेस्त्रॉ हमारे घर के बिल्कुल ही पास था।डेटलेफ को सबीने के साथ घर भेज कर मै उनके सारे प्रेजेन्टस एक वेटर की मदद से समेटने मे लग गया।प्रेजेन्टस इतने ज्यादे थे कि अकेले तो मै उन्हे उठाने या ढोने से रहता।इसके पहले कि मै किसी वेटर की मिन्नतें करता,सबीने आ चुकी थी।अनगिनत थैले उठाये हम घर की तरफ बढ चले।सम्हाल कर मैने सारे प्रेजेन्टस उसके ड्राईन्गरूम मे सजा दिये।डेटलेफ अपने विस्तर पर आराम से लेटा खर्राटे मारे जा रहा था।उसके पास तो ऐसे भी दो सप्ताह की छुट्टियॉ थी,पर मुझे दूसरे दिन काम पर जाना था।
सबीने से विदा लेते वक्त मैने उसे हर धन्यवाद देते हुए उसके वैवाहिक जीवन के लिए तमाम कामनायें कही:तुम अपना और डेटलेफ का ख्याल रखना।तुमदोनो को जब भी मेरी जरूरत पड़े,मुझे याद करना।मुझसे जो कुछ भी हो सकेगा,मै उसे करूँगा।
मै वापस अपने घर चला आया।
दूसरे दिन काम के बाद मै वापस घर लौटा ही था कि मेरी कौल बेल घरघराई।मै अपने कपड़े तक न बदला था।पूरा बदन थकावट से टूट रहा था।अनमयस्क उठ कर जब दरवाजे पर गया तो देखा दरवाजे पर सबीने खड़ी है।झटपट दरवाजे की जंजीर हटा कर उसे मै अन्दर ड्राईन्गरूम मे ले आया।वो मेरे लिए गैर थोड़े ही थी।एक सोफे पर उसे बिठा कर मै उसके बगल मे ही जा बैठा
:तुम्हारे लिए एक कप चाय बनाऊँ!डेटलेफ कहॉ है!साथ क्यों नही आया!
:घर पर ही है।सो रहा है।
:उसे पता है कि तुम मेरे पास हो!
:हॉ!कह कर वो फफक फफक कर रोने लग पड़ी:
प्रमोद!डेटलेफ को तुम कभी ये न बताना कि तुम मुझे ब्रूसलरस्ट्रासे से जानते हो।मेरे आयरिश पब के जीवन के बारे मे तो उसे पता है,पर ब्रूसलरस्ट्रासे के जीवन के बारे मे कुछ नही जानता।
:तुम कौन सी बकवास किये जा रही हो!तुम ब्रूसलरस्ट्रासे की सबीने हो ही नही सकती।
रोते रोते ही उसने मुझे अपने गले का तिल और अपने बॉह का सॅपोलिया दिखाया।जो मै देख रहा था,उस पर मै सहज विश्वास नही कर पा रहा था।मेरे मन मे एक दूसरी खुशी उमड़ी चली जा रही थी।
उसके कन्धे हल्के से सहलाते हुए मैने उससे पूछा:तुम डेटलेफ के संग खुश तो हो न!
:बेहद।
:फिर तुम क्यों रोये चली जा रही हो!तुम सहज हो लो।मै तुम्हारे लिए एक कप चाय बनाके लाता हूँ।

दो कप चाय बना के मै ड्राईन्गरूम मे आया और सबीने के सामने एक कप रख कर दूसरा कप अपने हॉथो मे थामे मै दुबारा उसके बगल मे जा बैठाः
तुम्हे इस कदर क्या रूला रहा है सबीने!
ःमेरा सस्पेंशन प्रमोद।
ःतुम्हे किस वजह से सस्पेंड किया गया था!
ःवजह तो शराब थी.पर तुम मेरा विश्वास करो.उन दिनो मे शराब छूती तक न थी।हमारे स्कूल का डायरेक्टर कौनराड मेरी हर कलिग के साथ सो चुका था।बस मेरे संग उसके सोने का सपना पूरा न हो पाया।मै शराब के नशे मे धुत्त स्कूल मे बच्चों को पढाने आती हूॅ.ये ही इल्जाम उसने मुझ पर लगाया था।मेरी सारी कलिगें मेरे खिलाफ गवाह बन गई।मै ये केस हार गई।मुझे सस्पेंड कर दिया गया।इस सस्पेंशन ने मुझे इतना तोड़ा कि मै दलदलों मे डूबती चली गई।मेरा विश्वास करो प्रमोद।
आखिरकार अन्त मे मेरे सोची गई बातों को एक पुष्टि मिल चुकी थी।मेरा मन सदा ये कहता था कि सबीने को महज उसका सस्पेंशन नही तोड़ सकता था।उसे किसी एक असत्य और अन्याय ने तोड़ रखा था।
सबीने को ये पता नही था कि मुझे उसके जीवन के सॅवर जाने की कितनी खुशी थी।इससे भी ज्यादे खुशी मुझे इस बात की थी कि आखिरकार डेटलेफ को इस बात का भान हो पाया कि एक बैवाहिक जीवन और एक यायावरी जीवन मे थोड़ा बहुत अन्तर तो होता ही है।
जर्मनी की व्यवस्था कुछ इस तरह की है कि यहॉ बिना किसी का मुॅहताज बने जीया भी जा सकता है और मरा भी जा सकता है।दसों सामाजिक सुरक्षायें.बीसो इन्श्योरेंसेस.पर कईयों को ये पता नही है कि असहायता मे जो अकेलापन मन मे घहराता है.उसे सिर्फ अपने परिवार के साथ ही बॉटा जा सकता है।
सबीने को समझा बूझा कर मै वापस भेजा.पर मेरा मन ये कतई मानने को तैयार न था कि वो ब्रूसलरस्ट्रासे की सबीने हो सकती है।उसका तो जैसे कायाकल्प ही हो चला था।उसकी ऑखों मे उसके ऑसू दुबारा लौट चले थे।उसके चेहरे की खोई मुस्कान दुबारा वापस लौट चुकी थी।
धीरे धीरे ये परिवार मेरे निकट आता जा रहा था।हर शनिवार की शाम या तो मै इनके घर पर होता था या फिर ये मेरे घर पर.वरना संक्षिप्त मुलाकातें तो प्रायः हर दिन ही हुआ करती थी।इन्हे मेरे बनाये इन्डियन खाने बेहद अच्छे लगते थे।
जब मौसम बढियॉ होता था.तब मै इनके संग पार्को मे घूमने भी जाता था।अक्सर मुझे ये आऊटिंग पर भी साथ ले जाते थे।
डेटलेफ के परिवार से मेरा सम्बन्ध पिछले आठ वर्षो से है।इन आठ वर्षो मे मेरे जीवन मे तो कोई खास परिवर्त्तन नही आया.पर डेटलेफ और सबीने के जीवन मे दो सुन्दर बेटियों का अभ्यूदय हुआःअनालेने और लीजा का।अनालेने सात वर्ष की होने को आई और लीजा चार वर्ष की।ये दोनो मेरे ही हॉस्पीटल के मैटर्निटी वार्ड मे पैदा हुई।इनके जन्मों मे मै डेटलेफ से पहले इनके पास था।अनालेने पढने दूसरी क्लास मे जाती है और लीजा एक मिनि क्लब मे।इस दरम्यान सबीने ने भी अपना नर्सिन्ग कोर्स पूरा कर लिया।बेरिंग हॉस्पीटल मे उसके पास आधे दिन का काम भी है।डेटलेफ साठ वर्ष का हो चला है।सिगरेट छोड़ कर वो पाईप पीने लगा है।अपनी इस उम्र मे भी उसके दॉये बॉये झॉकने की आदत तो नही गई है.पर सबीने और अपनी बेटियों मे उसके प्राण बसते है।
पिछले आठ वर्षो से न सिर्फ शनिवार का दिन.बल्कि सभी के जन्मदिन हम आज तक इकठ्ठे मनाते आ रहे है।ईस्टर.एक्समस.इयर्स इव सब कुछ मै इनके साथ मनाता हूॅ।आये दिन सबीने अपनी बेटियों के साथ एक बड़े थर्मस मे कोई न कोई शाम का खाना लिये दरवाजे पर आ खड़ी होती है।मना तक नही किया जाता है।
मुझे एक हल्की सी छींक भी क्या आती है कि.पूरा परिवार हाजिर हो जाता हैःकोई मेरे बिस्तर बदल रहा है.तो कोई थर्मामीटर लिए खड़ा है।कोई मेरे बिखरे सामान समेट रहा है.तो कोई हिदायतें दिये जा रहा है।अपने पीछे ये मेरे लिए एक बेहद सुखद अनुभूति छोड़ जाते है।
डेटलेफ अपने जीवन मे बस लोगों की आहें ही बटोरा था पर सबीने!मैं नही समझता कि उसने अपने जीवन मे किसी का हृदय सपने मे भी दुखाया होगा।यहॉ मै अपना अन्धा हस्ताक्षर देने को तैयार हूॅ।
ये रविवार का दिन था।शाम के आठ बज रहे थे।मेरे पास सबीने का फोन आया।रूँआसी आवाज मे उसने बताया कि अचानक डेटलेफ की तबीयत काफी खराब हो गई है।मै उस वक्त रसोई मे खड़ा खाने बना रहा था।मेरे पास कुछ इन्डियन मेहमान आये हुए थे।उन्हे कलछूल कराही सौंप कर मै भागता डेटलेफ के पास गया।वहॉ पता चला कि डेटलेफ को पिशाब के रास्ते खून आ रहा है।सबीने को बच्चियों को सम्हालने को कहके मै अविलम्ब एक टैक्सी को फोन किया और डेटलेफ को समेट कर अपने हॉस्पीटल भागा।उसे अविलम्ब काटेटर दिया गया और वार्ड नम्बर आठ मे एडमिट कर लिया गया।खून से उसके कपड़े सन चुके थे।बिना किसी का इन्तजार किये मैने खुद उसके कपड़े बदले.उसे अस्पताल की ढीली ढाली कमीज पहनाई और बिस्तर पर लिटाया।इस काटेटर की वजह से उसे जो दर्द हो रहा था.वो उसके लिए असहय था।मुझे एक डाक्टर को बुलवाना पड़ा।नावेलजीन से उसका दर्द तो कम हो गया.पर मै देख रहा था कि काटेटर से लगे प्लास्टिक के बैग मे सिर्फ खून जमा हो रहा था।दर्द के बावजूद धीरे धीरे डेटलेफ की ऑखें बन्द होती जा रही थीं।जब वो बिल्कुल सो गया.तब मुझे भी वार्ड छोड़ना पड़ा।
रात के साढे ग्यारह बज रहे थे।मै पैदल ही घर की तरफ बढ चला।मै व्यक्तिगत प्रार्थनाओं पर तब आता हूॅ.जब मुझसे ऐसा कुछ छिनने का प्रयास किया जाता है.जो मेरा जीवन दुरूह बना सकता है और मेरा मन उदासियों से भर सकता है।सहमी सबीने और उसकी बच्चियों का चेहरा मुझे अन्तर्तम तक उदास कर रखा था।पन्द्रह मिनट के अन्दर मै सबीने के दरवाजे पर था।मुझे उसका कौल बेल तक न दबाना पड़ा।दरवाजा खुल गया था।सबीने के दोनो पैर थामे उसकी दोनो बेटियॉ खड़ी थी।बिना एक शब्द बोले मैने इन तीनो को अपनी बॉहो मे समेट लियाःडेटलेफ को वार्ड नम्बर आठ मे एडमिट कर लिया गया है।उसे एक काटेटर दिया गया है।वो सो रहा है।अब दो चार इन्वेस्टिगेशन्स के बाद ही ये ट्रेस हो पाएगा कि उसे कौन सी बीमारी है।
सबीने के साथ उसकी दोनो बेटियॉ भी सिसकी चली जा रही थी।मेरा मन भी भारी हो चला था।इन्हे ढाढस बॅधाते हुए कहा कि डेटलेफ को कुछ नही होना है।वो अच्छे डाक्टरों के बीच मे है।जल्द ही अच्छा हो जाएगा।घबराने की कोई खास बात नही है।
डेटलेफ एक सप्ताह मेरे हॉस्पीटल मे रहा।काम से मुझे जब भी समय मिलता था.मै उससे मिलने चल पड़ता था।सबीने अपनी दोनो बेटियों के संग वहॉ सुबह से ही आई होती थी।उसकी दोनो बेटियॉ डेटलेफ के पैताने बैठी होती थी और सबीने उसके सिरहाने बैठी डेटलेफ का हॉथ थामे उसका सर सहलाती रहती थी।डेटलेफ का बचा खाना उसकी बेटियॉ खा लेती थीं।सुबह से शाम तक सबीने बिना कुछ खाये पीये डेटलेफ के

बगल मे बैठी रहती थी।काम के बाद कैन्टिन से मै दो चार पैस्ट्रियॉ हमेशा बॅधवा लेता था.पर सबीने से कुछ खाया ही न जाता था।सारी पैस्ट्रियॉ उसकी बेटियॉ खा जाती थीं।

बुद्धवार को डेटलेफ के गॉलब्लैडर के प्यूलिप्स ऑपरेट करके हटा दिये गये और उन्हे इनवेस्टिगेशन के लिए भेज दिया गया।दूसरे दिन उसका रिजल्ट भी आ गया।उसके प्रोस्ताता मे कैन्सर था।शनिवार को उसे रिलिज कर दिया गया।डेटलेफ अपने घर आ गया।उसे बहिरंग चिकित्सा दी जानी थी।डेटलेफ के पास जीवन के और कितने वर्ष शेष हैं.ये सिर्फ दो बातों पर निर्भर करता थाःउसके कैन्सर का क्या प्रारूप है और वो किस स्टेज मे है.एवम उसे किस तरह की थिरैपी दी जाएगी।

डेटलेफ परिवार मे आई और चिटकी मुस्कराहटें और खिलखिलाहटें काफूर हो चली थी और फिर कब ये इस परिवार को वापस मिलेंगी.ये कहना बड़ा मुश्किल था।डेटलेफ को अपनी कोई खास फिक्र नही थी।उसे बस एक ही चिन्ता खाये जा रही थी कि उसके गुजरने के बाद सबीने और उसकी बेटियों का क्या होगा!

यकायक इस परिवार के प्रति मेरा दायित्व मुझे एक कोने मे ले जा पटका थाःमै ज्यादे से ज्यादे इस परिवार को भटकने से रोक सकता था।इन्हे एक हद तक अपनी सुरक्षा दे सकता था.पर मै डेटलेफ का दर्जा नही ले सकता था।यहॉ मुझे सबीने ने ही उबाराःप्रमोद!बस तुम हमारे लिए अन्जान न बन जाना।तुम्हारे संबल के साथ मै अपने सारे दायित्व निभा ले जाऊॅगी।तुम बस हमे रास्ते दिखाते रहना।तुम हमारे दोस्त ही नही .बल्कि एक सगे भाई जैसे हो।तुम्हारे अलावे हमारे पास कोई भी सगा नही है।

अनालेने और लीजा मेरे पैरों से लिपटी रोये जा रही थी.सबीने ऑसुओं मे नहाये खड़ी थी.डेटलेफ अपने दाहिने हॉथ पर अपना सर रखे सिसके जा रहा थाः

प्रमोद कुमार सिंह